

धान की फसल में रोग प्रबंधन

*अभिषेक यादव¹, अनिल कुमार पाल² एवं जितेन्द्र कुमार³

¹विषय वस्तु विशेषज्ञ (कीट/सूत्रकृमि विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया, उत्तर प्रदेश

²विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, सोहांव, बलिया, उत्तर प्रदेश

³विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुचिकित्सा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया

(आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: abhicoa2@gmail.com

धान हमारे देश की एक मुख्य फसल है जो पूरे विश्व की आधी से ज्यादा आबादी को भोजन प्रदान करती है। धान की उपज को क्षति पहुंचाने वाले कारणों में रोगों का प्रमुख स्थान है। यद्यपि धान की उपलब्धता प्रजातियों की उपज क्षमता अच्छी है फिर भी बहुत से रोगों के कारण उपज में कमी पायी गयी है।

धान की फसल में लगने वाले मुख्य रोग

धान का झोंका रोग

लक्षण

- ✓ इस रोग के लक्षण पौधे के सभी वायवीय भागों पर दिखाई देते हैं, परंतु पत्तियां और पुष्पगुच्छ इस रोग से अधिक प्रभावित होती हैं।
- ✓ प्रारंभिक लक्षण पौधे की निचली पत्तियों पर धब्बे दिखाई देते हैं जब ये धब्बे बड़े हो जाते हैं तो ये धब्बे नाव अथवा आंख की जैसी आकृति के जैसे हो जाते हैं।
- ✓ इन धब्बों के किनारे भूरे रंग के तथा मध्य वाला भाग राख जैसे रंग का होता है। बाद में धब्बे आपस में मिलकर पौधे के सभी हरे भागों को ढक लेते हैं जिससे फसल जली हुई प्रतीत होती है।

प्रबंधन

- ✓ रोगरोधी किस्मों का चयन करना चाहिए।
- ✓ बीज को सदैव ट्राइकोडरमा से उपचारित करके ही बुवाई करना चाहिए।
- ✓ फसल में रोग नियंत्रण हेतु एजोक्सीस्ट्रोबिन 18.2 एस० सी, ट्राइसाइक्लाजोल 75 प्रतिशत डब्ल्यूपी-300 ग्राम, हेक्साकोनाजोल 5.0 प्रतिशत ईसी-1 लीटर, छिड़काव करना चाहिए।

जीवाणु झुलसा या झुलसा रोग

लक्षण

- ✓ यह रोग पौधे की छोटी अवस्था से लेकर परिपक्व अवस्था तक कभी भी लग सकता है।
- ✓ इस रोग में पत्तियां नॉक अथवा किनारों से शुरू होकर मध्य भाग तक सूखने लगती हैं।
- ✓ संक्रामण की उग्र अवस्था में पत्ती सूख जाती है। बालियों में दाने नहीं पड़ते हैं।

प्रबंधन

- ✓ शुद्ध एवं स्वस्थ बीजों का ही प्रयोग करें।
- ✓ बीजों को बुआई करने से 2.5 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन और 25 ग्राम कापर आक्सी क्लोराइड के घोल में 12 घंटे तक डुबोयें।
- ✓ इस बीमारी को लगने की अवस्था में नत्रजन का प्रयोग कम कर दें।
- ✓ खेत में रोग दिखाई देने पर स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 15 ग्राम + 500 ग्राम कहपर अह्वक्सीक्लोराइड को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए। आवश्यकतानुसार दूसरा छिड़काव 10-15 दिनों बाद करें।

शीथ झुलसा या आवरण झुलसा रोग

लक्षण

- ✓ खेत में इस रोग के लक्षण कल्ले बनने की अंतिम अवस्था में प्रकट होते हैं। लीफ शीथ पर जल सतह के ऊपर से धब्बे बनने शुरू होते हैं। इन धब्बों की आकृति अनियमित तथा किनारा गहरा भूरा व बीच का भाग हल्के रंग का होता है।

- ✓ अनुकूल परिस्थितियों में कई छोटे-छोटे धब्बे मिलकर बड़ा धब्बा बनाते हैं। इसके कारण शीथ, तना व पत्ती पूर्ण रूप से ग्रसित हो जाती है, व पौधे मर जाते हैं।

प्रबंधन

- ✓ बीजों को फफूंद नाशक से उपचारित करके बुआई करें।
- ✓ कार्बेन्डाजिम 1.0 कि.ग्रा. या प्रोपिकोनाजोल 500 मि.ली. या हेक्साकोनाजोल 1.0 लीटर मात्रा 500-600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

आभासी कंड या ध्वज कंड या हल्दी रोग**लक्षण**

- ✓ इस रोग के लक्षण पौधों की बालियों में केवल दानों पर ही दिखाई देते हैं।
- ✓ रोगजनक के विकसित हो जाने के कारण बाली में कहीं कहीं बिखरे हुए दाने बड़े मखमल के समान चिकने हरे समूह में बदल जाते हैं, जो अनियमित रूप में गोल अंडाकार होते हैं।
- ✓ इनका रंग बाहरी ओर नारंगी पीला और मध्य में लगभग सफेद होता है, इस रोग से बाली में कुछ ही दाने प्रभावित होते हैं।

प्रबंधन

- ✓ सदैव बीज उपचार करके ही बुवाई करनी चाहिए।
- ✓ खेत को खरपतवार मुक्त रखना चाहिए।
- ✓ खेत की तैयारी के वक्त खेत की सफाई कर उसकी गहरी जुताई करके तेज धूप लगने के लिए खुला छोड़ देना चाहिए।
- ✓ प्रोपिकोनाजोल 500 मि.ली. या हेक्साकोनाजोल 1.0 लीटर मात्रा 500 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

खैरा रोग

धान में लगने वाला खैरा रोग, मिट्टी में जिंक की कमी की वजह से होता है।

लक्षण

- ✓ पत्तियों पर हल्के पीले रंग के धब्बे बनते हैं जो बाद में कथई रंग के हो जाते हैं।
- ✓ पौधा बौना रह जाता है और व्यात कम होती है।
- ✓ प्रभावित पौधों की जड़ें भी कथई रंग की हो जाती हैं।
- ✓ पौधों का विकास रुक जाता है।
- ✓ पत्तियां सिकुड़ने और मुरझाने लगती हैं।

प्रबंधन

- ✓ खैरा रोग से बचने के लिए, धान की फसल पर पांच किलो जिंक सल्फेट और 20 किलो यूरिया को 1,000 लीटर पानी में घोलकर करे।